जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाज़ार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

मथुरादास की डायरी • मुद्राराक्षस

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक

जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण

1992

मूल्य

पचास रुपये

मुद्रक

अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजीमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लैड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

टेढ़ा उल्लू

मथुरादास गायब रहे। गायब रहने की वजह थी। अपना उल्लू कुछ टेढ़ा हो गया था। उसे सीधा करना बहुत जरूरी था। उल्लू सीधा न कर पाने वाला आदमी भौंदू ही कहा जाएगा।

सच बात यह है कि हमें अपना टेढ़ा हो गया उल्लू सीधा करने में कठिनाई इसीलिए हो रही थी कि हमें मालूम हुए बिना ही पिछले दिनों न जाने कब उल्लू सीधा करना एक कला बन चुका था। बल्कि कला ही क्यों उसमें पर्याप्त तकनीकी विकास हो चुका था। जहाँ इस प्रक्रिया ने कला और तकनीकी रूप ले लिया था वहीं उसके कुछ उच्चस्तरीय प्रतिष्ठा-केन्द्र भी विकसित हो चुके थे। कालीनों का केन्द्र भदोई है और ऊनी कपड़ों का लुधियाना। हथकरघे का केन्द्र गोरखपुर है और चिकनसाजी का लखनऊ। वैसे लखनऊ वाली बात का पता हमें सिर्फ पर्यटन विभाग की पुस्तिका में चलता है।

अच्छा, यहाँ यह पहचान भी जरूरी है कि अपने उल्लू को सीधा करवाने का सही केन्द्र कौन-सा है। कुछ लोगों ने अब अपना लुधियाना भोपाल में समझना शुरू कर दिया है। यह बहुत सही बात नहीं है। भोपाल में कुछ बहुत खास किस्म के उल्लू तो सीधे किये जा सकते हैं, बाकी लेकर आप पहुँच तो जाएँगे पर वापस होते हुए उल्लू ही नहीं आप खुद ही टेढ़े हो चुके हो सकते हैं।

यहाँ मैं उन लोगों की बात नहीं कर रहा जिन्हें आप कितना भी टेढ़ा उल्लू थमा दें और कहीं भी बैठा दें, वे उसे सीधा करके टिका देंगे। टेढ़े-सीधेपन का सवाल ही अप्रासंगिक लगता है। मैं तो केवल ऐसे आदमी की स्थिति की चर्चा करना चाहता हूँ जिसके पास उल्लू है पर टेढ़ा है और वह किसी कीमत पर सीधा नहीं हो रहा है।

मथुरादास इधर बलपूर्वक अपने उल्लू के साथ व्यस्त थे कि उधर 'सारिका' ने विशेषांक निकालने शुरू कर दिये।

वैसे यहाँ यह बता दूँ, अगर लेखक थोड़ा-सा चतुर हो तो विशेषांक कम-से-कम उसका उल्लू तो सीधा कर ही देते हैं। बंगाल में तो दुर्गा-पूजा पर इतने भारी विशेषांक निकलते हैं कि उल्लू काफी दिन सीधा ही बना रह सके। उधर अपराध कथा विशेषांक निकले, फिर महिलाओं के साथ दुराचार करने वाले विशेषांक निकले (देखिए भाषा कमजोर हो तो क्या अनर्थ होता है)। मथुरादास का उल्लू इतना टेढ़ा तो नहीं ही हुआ था कि इनसे भी न सीधा होता। और नहीं तो मथुरादास यह लिख सकते थे कि उनका कोई दोस्त एक बार उन्हें बदनाम गली ले गया था पर वहाँ का परिवेश देखकर वे नाराज होकर वापस आ गए। इसमें हलफनामा तो माँगा नहीं जाता। मथुरादास जैनेंद्र से भी कुछ नहीं सीखे। क्योंकि स्त्रीयातना विशेषांक के चक्कर में जैनेंद्र अपना अच्छा-खासा सीधा उल्लू टेढ़ा करके फिर सीधा करने लगे हैं।

इतना हुआ ही था कि जासूसी कथा विशेषांक निकलने शुरू हो गए। मुझे यकीन है कि सारिका डकैती विशेषांक भी निकालेगी। यह विशेषांक बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। डकैती राष्ट्रीय महत्त्व की घटना है। इससे बहुतों का उल्लू सीधा होता है। बल्कि कभी-कभी तो एक-एक आदमी कई-कई उल्लू सीधे कर लेता है। जहाँ उसे सीधा करने लायक उल्लू उपलब्ध न हो वहाँ वह उल्लू के बजाय कुछ भी सीधा कर लेता है और चलता बनता है।

हमारे पड़ोस के एक घर में डकैती पड़ी। इस डकैती से बहुतों के उल्लू एक साथ सीधे होकर बैठ गए। जिसके यहाँ डकैती पड़ी थी उसने हमें फोन पर बताया, "भाई साहब आपको एक खुशखबरी देनी थी।"

मैं समझा उनकी तरक्की हो गई है। पर वे बोले, "नहीं भाई साहब, हुआ यह कि कल मेरे यहाँ डकैती पड़ गई।"

"तो इसमें खुशखबरी क्या है भाई?"

इससे आगे फिर मित्र ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि मैं उन चन्द अभागों में से हूँ जिनका किसी भी प्रकार के उल्लू से पाला नहीं पड़ा।

मेरे मित्र के यहाँ डाकुओं ने लूटा तो थाने से पहले वे बीमा कम्पनी गए। अपने लुटनीय माल का खासा बीमा उन्होंने कराया हुआ था। बीमा कम्पनी वाला भी आनन्दित हुआ, क्योंकि मुआवजे के मोटे चेक से उसे भी थोड़ा लाभ हुआ। अब थाने की बारी आई। थानेदार ने पहले उससे लुटे हुए माल की सूची प्राप्त की। उसका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करता हुआ वह बोला, "घड़ी तुम्हारी ही थी?"

पड़ोसी ने कहा, "जी हाँ, बैंगलौर गया था तब खरीदी थी।"

"हूँ, बैंगलौर से खरीदी थी," दरोगा गम्भीर होकर बोला, "बैंगलौर तक तुमने जो यात्रा की उसका टिकट और घड़ी की रसीद हाजिर करो।"

मेरा उल्लू तो बंधु, टेढ़ा ही नहीं शायद विकलांग भी है। पर मेरे पड़ोसी का ठीक-ठाक था। मैं रसीद के इस सवाल पर बौखला जाता, पर मेरा पड़ोसी उतना ही प्रसन्न बना रहा। उसने तत्काल जेब में हाथ डाला और एक लिफाफा निकालकर दारोगा के हाथ में थमा दिया। उसमें सौ रुपये के पाँच नोट थे। दारोगा ने उसे समुचित रसीद और बैंगलौर-यात्रा टिकट मान लिया और तुरन्त डकैती की रपट दर्ज करवा ली। फिर सीना फुलाकर बोला, "आप इत्मीनान रखिए जनाब, हम डकैतों को छोड़ेंगे नहीं। आपका एक-एक सामान बरामद कराएँगे।"

पड़ोसी का उल्लू सीधा ही नहीं चतुर भी था। इसीलिए पड़ोसी ने दूसरी जेब से उतनी ही फुर्ती से एक लिफाफा और निकालकर दारोगा को थमा दिया और बोला, "आप कष्ट न करें श्रीमान्, रपट तो जरूरी थी इसीलिए लिखाई। हम लोग शरीफ आदमी हैं। पुलिस के चक्कर में नहीं पड़ना चाहते।"

अब तक की कार्यवाही से डकैती, बीमा वाले, पड़ोसी और दारोगा, इन चारों का उल्लू सीधा होने लग गया था, लेकिन अभी और लोग भी अपने टेढ़े उल्लू लिए हुए इसी पाँत में खड़े हो चुके थे। अपराध संवाददाता के लिए इसमें गम्भीर समाचार था। वह सीधे शहर कोतवाल के पास पहुँचा और बोला, "श्रीमान मथुरादास के पड़ोस में डकैती पड़ गई। अपराध के आँकड़े बहुत ऊपर जा रहे हैं।"

शहर कोतवाल ने कहा, "हम अपराधों पर जल्दी ही पूरा नियन्त्रण कर लेंगे।"

इतना कहकर उसने तत्काल दराज से निकालकर एक लिफाफा पत्रकार को थमा दिया। उस लिफाफे में पत्रकार के सेवानिवृत्त बाप के लिए एक कार्बाइन नामक मारक अस्त्र का लाइसेंस था।

इस लाइसेंस से कई मोटे उल्लू सीधे होने वाले थे। मकान किराए पर उठाने में बड़ी झिक-झिक होती है। मोटर टैम्पो या रिक्शा भी किराए पर उठाने वाला हमेशा झंझटों में पड़ा रहता है। कार्बाइन किराए पर उठाना बहुत सरल होता है। डकैत दो-तीन हजार रुपया प्रति रात पर उसे किराए पर ले जाते हैं। इस तरह पत्रकार के बाप का ही नहीं डकैतों का भी उल्लू सीधा होकर जाता है।

लेकिन टेढ़े उल्लुओं को सीधा करवाने के इच्छुक लोगों का सिलसिला यहीं समाप्त नहीं होता। डकैती का समाचार मथुरादास की बस्ती की पड़ोसी बस्ती के थाने तक भी पहुँचा। वहाँ का थानेदार अपना तबादला उसी इलाके में कराना चाहता था जहाँ मथुरादास रहते थे। वह डकैती की खबर पाकर अपने विधायक के यहाँ पहुँचा और बोला, "श्रीमान, दूसरे थाने में बड़ी अंधेर हो रही है। डकैतियाँ पड़ रही हैं और थाना सो रहा है।"

विधायक सुनते ही सब-कुछ समझ गया। बोला, "तुम तो उसे अच्छी तरह सँभाल सकते हो। इसके लिए अर्जी दो।"

थानेदार ने जेब से लिफाफा निकालकर सामने रख दिया। उसमें अर्जी नहीं, नोट थे।

लिफाफा उठाते हुए विधायक बोला, "अब तुम जाओ। तुम्हारा काम हुआ समझो। मैं गृहमन्त्री से कह दूँगा।"

इसके बाद विधायक गृहमन्त्री के पास गया और बोला, "आप तो जानते हैं मथुरादास पत्रकार आदमी हैं। उनके पड़ोस में डकैती पड़ गई। अब यह मामला समाचार-पत्रों में गम्भीर रूप ले सकता है।"

गृहमन्त्री ने कहा, "माननीय विधायक, आपने कभी मुझसे कहा था कि मुझे कुछ सेवा का मौका देंगे।"

विधायक ने अपने प्रिय दारोगा के तबादले का मामला उन्हें सौंपा और

बोले, "मान्यवर, आपकी मुझ पर हमेशा कृपा रही है।"

तब गृहमन्त्री ने कहा, "मान्यवर, देखिए आप तो केन्द्रीय नेताओं से अक्सर मिलते रहते हैं। आप उनको बताइए कि मुख्यमन्त्री भ्रष्ट हो चुके हैं और प्रशासन ठप्प पड़ा है। मुख्यमन्त्री बनने लायक मैं ही सही व्यक्ति हूँ। केन्द्रीय नेताओं के कान में यह सब डालें।"

"मैं बलपूर्वक आपका समर्थन करूँगा।" विधायक ने कहा।

इस प्रकार आप देखिए कि छोटी-सी घटना से चतुर व्यक्तियों ने अपने न जाने कितने उल्लू तुरन्त सीधे कर लिये और एक मैं हूँ मथुरादास कि उधर 'सारिका' विशेषांक निकाले जा रही है और मैं अपना टेढ़ा उल्लू लिये अलग बैठा खींचतान किये जा रहा हूँ।

बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख

इस देश में जब आजादी की लड़ाई हो रही थी तो कई सिरफिरे लोग ऐसे भी थे जो शहीद हो गए। जैसे भगतसिंह, बिस्मिल, आजाद, सुखदेव, खुदीराम बोस और भी बहुत-से लोग। मथुरादास सोचते हैं, यह बुरा हुआ। वे जान न देते तो मन्त्री होते। उन्हें सत्ता सुख मालूम ही नहीं था, इसलिए सच्चा सुख शहादत में मानते रहे। सवाल यह है कि बड़ा क्या है? सच्चा सुख या सत्ता सुख? मथुरादास को लगता है, दूसरा सुख ही ठीक होता है। शहीद होने से फायदा क्या?

आप कहेंगे उनकी चिताओं पर हर बरस मेले लगेंगे। हर बरस मेले लगने का आश्वासन देकर किसी नेता से या मन्त्री से पूछिए, क्या वह मरने को तैयार है? वह आपको मार देगा। हाँ, वह दूसरा काम खुशी से कर सकता है। मेला लगा सकता है। शहीद दूसरा हो और मेला लगाने का काम आपको मिले तो इससे मजे की बात और क्या हो सकती है। बल्कि मेले में शहादत का भी आनन्द आ जाता है।

मथुरादास एक बार एक शहीद की समाधि देखने गए। वहाँ मेला सचमुच ही लगा हुआ था क्योंकि शहीद की, उस दिन जन्म-तिथि थी। वहाँ मन्त्री आये हुए थे। मंच पर सेठ मिलावट राम भी थे और एक बड़े जमींदार राजा कफन खसोट सिंह भी थे। सेठजी ने शहीद की मूर्ति बनाने के लिए एक लाख रुपया चन्दा दिया था और अब वे आगे पूरे एक साल तक सरसों के तेल में मोबिल ऑयल मिलाने वाले थे, क्योंकि पिछले एक साल से वे मसालों में घोड़ों की लीद सफलतापूर्वक मिला चुके थे। राजा साहब ने शहीद के नाम से एक ट्रस्ट बना दिया था जिसके दफ्तर में दरअसल चोरी की गई मूर्तियाँ जमा की जाती थीं। मन्त्रीजी ने बड़े भावविभोर होकर भाषण दिया। बोले, "देश के बच्चे-बच्चे को भगतसिंह और चन्द्रशेखर